अनुभव

9

फ़ील्ड विज़िट के दौरान पठन कौशल से संबंधित कुछ अनुभव

रौमिला सोनी*

प्राथमिक शिक्षा की स्थिति का खराब होना असमंजस की बात नहीं है। प्राथमिक स्तर पर बच्चों के स्कूल छोड़ देने का मुख्य कारण उनकी पठन योग्यता का न होना है। प्राथमिक स्कूल अगर बच्चों को स्कूलों में रोक नहीं पाते, बच्चों को साक्षर बनाने में असफ़ल रहते हैं तो इसके लिए हमारे अपने प्राथमिक स्कूलों की शिक्षा पद्धति तथा पूर्व-प्राथमिक शिक्षा की ओर ध्यान न देना ही इस समस्या का मूल कारण हो सकता है। बच्चों में तीसरी कक्षा में आने पर भी पठन योग्यता का न होना प्राथमिक शिक्षा की खराब स्थिति की ओर इंगित करता है। इसके लिए मुख्य रूप से ज़िम्मेदार हमारी शिक्षा प्रणाली है।

वर्ष 2012 के दौरान राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी) की तरफ़ से यह तय किया गया कि राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 (एन.सी.एफ.-2005) पर आधारित पाठ्यपुस्तकों को भली प्रकार से जाँचने-परखने व उनके सार्थक उपयोग की जानकारी प्राप्त करने के लिए एन.सी.ई.आर.टी. का प्रत्येक संकाय सदस्य कम-से-कम तीन महीनों के लिए किसी भी विद्यालय में जाकर खुद विद्यार्थियों को पढ़ाए तथा अप्रत्यक्ष रूप से पुस्तकों के विषय में शिक्षकों तथा विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया प्राप्त करें।

इसी संदर्भ में मैंने एक प्राथमिक विद्यालय को चुना और तीसरी कक्षा के बच्चों को 'पर्यावरण अध्ययन' विषय पढ़ाया। इस दौरान विद्यालय के संबंध में मेरे कुछ संस्मरण इस प्रकार हैं-

तीसरी कक्षा में दाखिल होते ही मैंने देखा कि बहुत से बच्चों का ध्यान उनकी पाठ्यपुस्तक की तरफ नहीं था। शिक्षिका ने एक बालिका को खड़ा कर उसे पाठ पढ़ने को कहा और बाकी बच्चे उस बालिका के पीछे पंक्ति दोहराने लगे। रेशमा को पढ़ने में कई जगह परेशानी हो रही थी, कई जगह तो बिना मात्रा के चार अक्षर के शब्द भी बोल नहीं पा रही थी। शिक्षिका उसे ऐसे शब्दों को बोल कर बता रही थी। मुझे बताया गया कि रेशमा समूची कक्षा में सबसे अच्छा पढ़ने का कौशल रखती थी।

* *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली-110016

पहला दिन था, मैं असमंजस में पड़ गई, अगर रेशमा की पठन योग्यता यह थी तो अन्य बच्चों की कैसी होगी? रेशमा तीसरी कक्षा की छात्रा थी और शब्दों को अटक-अटक कर जोड़-जोड़ कर पढ़ती थी। राधा, सुधा, शबाना और कंचन भी इसी तरह पढ़ने की कोशिश करती थीं। ज़्यादातर अन्य बच्चे केवल किताब की तरफ आँखें गढ़ाए, वाक्यों को दोहराते रहते थे, उन्हें यह पता ही नहीं चलता था कि रेशमा कौन-सी पंक्ति या कौन-सा पैरा पढ़ रही है। पूरी कक्षा में केवल एक दोहराने का-सा शोर सुनाई देता था। कुछ बच्चे आगे आकर रेशमा की तरह पढ़ना भी चाहते थे, किंतु कुछ वाक्य या शब्दों के बाद अटक जाते थे। और कुछ बच्चे तो प्रत्येक शब्द पर रुककर शिक्षिका से पूछते थे, ''मैडम यह क्या लिखा है?'' दो-तीन दिन गुज़रने पर मैंने पाया कि अधिक बच्चे श्यामपट्ट से उतारने में, लिखने में तो सक्षम हैं, किंतु वे बिना समझे उतारते हैं। इनमें से कुछ बच्चे ब्लैकबोर्ड से उतारने में भी मात्रा की गलतियाँ करते थे। किंतु सबको लिखने में मज़ा बहुत आता था। तीसरी कक्षा की सरिता अक्षर-अक्षर को जोड़ कर शब्द बनाती थी। सुधा शब्दों को जोड़ कर वाक्य बनाती थी। कई बच्चे शब्दों को अक्षरों में और वाक्यों को शब्दों में तोड़ते हुए पढ़ते थे। दुर्भाग्य से ऐसा करने वाले बच्चों की संख्या बहुत अधिक भी।

गौर करने वाली बात यह है कि बच्चे पिछली कक्षाओं से ही बिना पठन कौशल के आ गए थे क्योंकि वे पहली कक्षा की किताब को भी कठिनाई से पढ़ पाते थे और बहुत से बच्चे तो वह भी नहीं कर पाते थे। इनमें से कुछ बच्चों को जो पढ़ने में रुचि दिखाते थे, अँग्रेजी पढ़ने का बड़ा चाव था। वे मुझसे अकसर कहा करते थे, ''मैडम जी इंगलिश में बोलना सिखाओ।'' बच्चों की इस ललक को देख मैंने उनको छोटे-छोटे वाक्य अँग्रेजी में बोलने सिखाए और वे बड़ी उत्सुकता से अँग्रेजी की कक्षा का इंतज़ार करते थे।

प्रतिदिन मैं घर आने के पश्चात् यह सोचने पर मजबूर हो जाती थी कि ऐसा क्या करूँ कि इन बच्चों को तीसरी कक्षा में धाराप्रवाह पढ़ना सिखा पाऊँ, हालाँकि मैं अध्ययन की कक्षा लेती थी। यहाँ मेरा अपना पूर्व-प्राथमिक शिक्षा का अनुभव बहुत काम आया। मुझे पता था कि बच्चों को ध्वनि विभेदीकरण तथा दृश्य विभेदीकरण के कौशल संबंधित क्रियाकलाप पहली कक्षा या उससे भी पहले अर्थात् पूर्व-प्राथमिक शिक्षा केंद्र में नहीं कराए गए। बच्चों को एक प्रिंट समृद्ध वातावरण नहीं मिला, जिससे उन्हें प्रारंभिक साक्षरता (emergent literacy) का मौका मिले।

आज इन बच्चों को प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर जब पठन कौशल में कमज़ोर देखती हूँ तो पूर्व प्राथमिक का महत्त्व और भी बढ़ जाता है। जब तक हम बच्चों को ई.सी.ई. स्तर पर पढ़ने की तथा लिखने की तैयारी के भरपूर अवसर नहीं देते, तब तक हम अपने इन बच्चों को प्राथमिक शाला में पढ़ने से विमुख होते देखते रहेंगे।

कई अध्ययनों के अनुसार गरीब और आर्थिक रूप से कमज़ोर माता-पिता अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेज पाते, वे उन्हें काम पर भेज

देते हैं। फिर शिक्षा का अधिकार कानून-2009 लागू होने के कारण बच्चों का दाखिला तो हो जाता है, लेकिन स्कूल बच्चों का आधार तथा उन्हें पढ़ने लिखने में निपुण नहीं बना पा रहा है, इस कारण बच्चे स्कूल में टिक नहीं पा रहे हैं। 14 साल तक के आयु के बच्चों के लिए शिक्षा मुफ्त होने के कारण बच्चे स्कूल तो आने लगे किंतु बच्चों में साक्षरता फिर भी नहीं आ रही और बच्चों का ठहराव स्कूल में नहीं हो पा रहा।

सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत बच्चों को स्कूल में लाने तथा बनाए रखने के लिए अनेक योजनाएँ चलाई गईं, जैसे-मिड-डे-मील, मुफ्त यूनीफॉर्म आदि। बच्चे मिड-डे-मील के आकर्षण में स्कूल आते भी हैं किंतु फिर भी वे पठन कौशल में पीछे हैं। जो बच्चे पहली कक्षा से पढ़कर तीसरी कक्षा में आए हैं, वे भी भली-भाँति पढ़ना नहीं जानते या पठन कौशल में निपुण नहीं हैं।

बच्चों के पढ़ने व सीखने का कारण हम अभिभावकों का केवल गरीब होना नहीं बता सकते। कुछ बच्चे जो केवल स्कूल में वर्दी के पैसे बँटने पर आते हैं, तत्पश्चात् कुछ दिन आने के बाद फिर नहीं आते। इन बच्चों के स्कूल न आने का कारण क्या हो सकता है, यह निश्चय ही जानने की आवश्यकता है। किंतु जो बच्चे नियमित रूप से आ रहे हैं, रुकते भी हैं, पाठ की पंक्तियों को दोहरा रहें हैं, श्यामपटट् से ज्यों-का-त्यों उतार रहे हैं, वे आखिर सही रूप से साक्षर क्यों नहीं हैं?

फील्ड विज़िट के दौरान मैंने यह पाया कि मिड डे मील में भोजन अच्छा और साफ-सुथरा आता है। बहुत से बच्चे ऐसे थे जो अपना भोजन घर से लाते थे। उन्हें मिड-डे-मील का आकर्षण नहीं था। वे स्कूल में पढ़ने व सीखने आते थे। उन्हें अँग्रेज़ी सीखने का चाव था। उन्हें अपने साथियों के साथ खेलने में मज़ा आता था। अक्सर ये बच्चे मुझसे कहा करते थे, ''मैडम आप ही पढ़ाया करो'', क्योंकि मैं अक्सर उन्हें पाठ पढ़ाने से पूर्व, मध्य में और बाद में पाठ संबंधित कुछ क्रियाकलाप कराया करती थी, तो वे पढ़ने मे रुचि लेते थे। कुछ दिन पश्चात् मुझे नीता ने कहा, ''मैडम आप यहीं रहना। आप हमारी पुरानी टीचर जैसे हो, वे भी हमें बहुत अच्छे से पढ़ाती थीं।'' आरती जो पढ़ने में रुचि रखती थी, बोली, ''मैडम आप हमें पढ़ाते-पढ़ाते खेल भी कराते हो, हमें बहुत मज़ा आता है और समझ भी आता है''। कहने का तात्पर्य यह है कि क्यूँ हमारे स्कूल सभी बच्चों को साक्षर बनाने में सफल नहीं हो पाते? अँग्रेजी तो दूर की बात है, क्यूँ ये बच्चे अपनी मातृभाषा में भी नहीं पढ़ पाते हैं?

आखिर क्यों बच्चे पढ़ नहीं पाते, क्यूँ उन्हें कठिनाई होती है। प्राथमिक शिक्षा की स्थिति इतनी खराब क्यों है? अगर तीसरी कक्षा के बच्चों को पहली-दूसरी कक्षा की किताबें पढ़ने में दिक्कत आ रही है तो इसके लिए शुरू में दी गई शिक्षा और स्कूल पूर्व तैयारी की बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है। हो सकता है कि शिक्षण पद्धति ही बच्चों की पढ़ाई में रुचि न लेने का मूल कारण हो।

अपने अनुभवों से मैं यह कह सकती हूँ कि कहीं-न-कहीं प्राथमिक स्कूल की शिक्षण पद्धति, मूलभूत आवश्यकताएँ, जैसे- डिस्प्ले बोर्ड, स्वच्छता व सफाई, कक्षा में पर्याप्त जगह का होना, अधिगम सामग्री, आदि मुख्य रूप से ज़िम्मेदार हैं। पढ़ाने के प्रति उनके शिक्षकों के रवैये तथा लगाव को नकारा नहीं जा सकता।

कुछ सवाल जो मेरे ज़ेहन में अकसर उठते हैं- ''क्या हमारे यहाँ के प्राथमिक स्कूल बच्चों को स्कूल में रखने के लिए तैयार हैं? क्या प्राथमिक स्कूलों के साथ पूर्व-प्राथमिक शिक्षा केंद्र होता है?''

''क्या पूर्व-प्राथमिक शिक्षा केंद्र व प्राथमिक शिक्षा के तरीकों में संबंध होता है?'' क्या पूर्व-प्राथमिक शिक्षा केंद्र बच्चों को प्राथमिक शिक्षा के लिए तैयार करता है या बच्चे केवल केंद्र में आकर कुछ कविता, व गीत गा लेते हैं या इसके अलावा भी कुछ स्कूल पूर्व तैयारी संबंधित क्रियाकलाप करते हैं? ''क्या नर्सरी टीचर्स के रिफ्रेशर कोर्स या ट्रेंनिग में कक्षा एक और दूसरी के शिक्षक भी होते हैं?'' ''क्या स्कूल बच्चों को पर्याप्त मात्रा में खेल सामग्री देता है? जिससे बच्चों में समस्याओं को हल करने का कौशल विकसित हो सके?'' ''क्या बच्चों की प्रारंभिक साक्षरता के लिए स्कूल प्रत्येक कक्षा में प्रिंट-समृद्ध वातावरण देता है?'' ''क्या शिक्षक बच्चों को रटन प्रवृत्ति के बाहर निकाल कर उन्हें आपस में विचार-विमर्श के अवसर देते हैं?'' पढ़ना सीखने के लिए अधिकतर आज भी सरकारी स्कूलों में वर्णमाला लिखना, उनके नामों को जानना, उसका पुस्तक या श्यामपट्ट से उतारना यही चलन है।

डिस्पले के नाम पर कक्षा की दीवारों पर शिक्षक प्रतिदिन फल, वाहन, पक्षी आदि संबंधित चार्ट इत्यादि अपनी अलमारी से निकाल कर टाँग देती थी और स्कूल की सुबह की शिफ्ट समाप्त हो जाने पर बच्चे उसे पुनः अलमारी में वापिस रख देते थे क्योंकि दोपहर में लड़कों का स्कूल लगता था और यह दलील दी जाती थी कि दूसरी शिफ्ट के बच्चे सभी प्रदर्शित (डिस्पले) सामग्री खराब कर देते हैं, या फाड़ देते हैं। दो शिफ्ट में स्कूल जहाँ भी चल रहे हैं वहाँ दीवारों का वीरान और रंगहीन होना बहुत बड़ा कारण है।

मैंने यह भी पाया कि अगर 35 बच्चों का नामांकन है तो कक्षा की प्रतिदिन की हाज़िरी 25-26 के करीब रहती थी। बच्चों के अनुपस्थित होने के कारणों में से उनके ऊपर घर के काम का दबाव, बीमार हो जाना, छोटे भाई-बहन की देखभाल करना, गाँव चले जाना, स्कूल की पढ़ाई में रुचि न होना तथा पीछे से ही बिना स्कूल पूर्व तैयारी के दाखिला होना और निरंतर उसी प्रकार कक्षा-दर-कक्षा बढ़ते जाना। इनमें से मुख्य कारण जो मुझे स्कूल में रह कर फील्ड विज़िट के दौरान समझ आया, वह था गुणवत्ता का अभाव। पूर्व-प्राथमिक शिक्षण केंद्र में जो बच्चे हैं वे क्या सीख रहे हैं और सबसे बड़ी बात वे कैसे सीख रहे हैं, इसका बहुत महत्त्व है क्योंकि यह पूर्व तैयारी ही प्राथमिक शिक्षा को सहज और सरल बना देती है।

वर्तमान में स्थिति यह है कि शिक्षा का अधिकार कानून लागू होने के कारण (जिसमें हर बच्चे को शिक्षा का अधिकार है), स्कूल समुदाय के हर बच्चे का दाखिला कर लेते हैं, किंतु उन्हें शिक्षा में गुणवत्ता नहीं दे पाते। क्या भाषा के कौशलों से संबंधित क्रियाकलाप जो पढ़ने की पूर्व तैयारी की नींव डालते हैं, बच्चों को कराए जाते हैं? क्या बच्चों को दृष्टि विभेदीकरण, ध्वनि विभेदीकरण, क्रमानुसार लगाना, बाएँ से दाएँ की दिशा में काम कराना आदि कौशलों का विकास करने के लिए गतिविधियाँ करवाई जाती हैं उन्हें, इनके अवसर तथा अनुभव दिए जाते हैं?

एक कारण तो हुआ पठन कौशल का न होना, दूसरा कक्षा की दीवारों पर संबंधित सामग्री के प्रदर्शन का न होना और जैसा कि पहले भी बात की गई कि बच्चों के पठन कौशल के विकास के लिए यह आवश्यक है कि हम उन्हें एक प्रिंट समृद्ध वातावरण दें। इस बात की गंभीरता शिक्षक जितनी जल्दी समझ लें यह बच्चों के लिए अच्छा होगा।

स्कूल में सफलता के लिए पढ़ना-लिखना मुख्य रूप से बुनियादी कौशल है जिस पर ध्यान देना आज शिक्षक की ज़िम्मेदारी है। शिक्षकों को चाहिए कि वे पढ़ने की प्रक्रिया के तरीकों को जानें व समझें, अन्यथा प्राथमिक स्कूलों में बच्चे बुनियादी साक्षरता लिए बिना स्कूल से निकल जाएँगे।

जिन प्राथमिक स्कूलों में ई.सी.ई. केंद्र नहीं है, वहाँ शिक्षिकाओं को चाहिए कि बच्चों को कक्षा में दाखिले के बाद या पहले कम-से-कम 1½ महीने का 'स्कूल पूर्व तैयारी' कार्यक्रम चलाए जिसके अंतर्गत बच्चों को निम्नलिखित कार्य करने चाहिए-

- सुनने व बोलने के कौशल संबंधित क्रियाएँ
- अक्षरों का मिलान, पहचान व उनके नाम
- अक्षरों की ध्वनि पहचानना
- बाएँ से दाएँ की दिशा में कार्य करना
- चीज़ों का वर्णन करना
- कक्षा के वातावरण में उपलब्ध आम शब्दों का मिलान करना व पहचानना
- भाषायी खेल
- प्रिंट समृद्ध वातावरण
- कहानी व मैगज़ीन के पन्ने पलटना
- पढ़ने व लिखने का अभिनय करना

उपरोक्त भाषा संबंधी कौशल बच्चों के पठन कौशल के लिए आवश्यक मूल कौशलों के न होने के कारण बच्चों का मन पढ़ने में नहीं लग पाता और वे बहुत जल्दी ऊब जाते हैं। कई कारणों में से एक यह भी कारण है कि प्राथमिक शिक्षा के वर्षों में स्कूलों में स्थिरता नहीं बनी रहती।

पठन कौशल या पढ़ना सीखने के लिए लिखित चिन्हों का आस-पास के वातावरण में होना और बच्चों का ध्यान इन प्रिंट और चिन्हों की तरफ आकृष्ट कराना पढ़ना सीखने के लिए एक असरदायक और गतिशील तरीका साबित हो सकता है। प्रारंभिक साक्षरता और पढ़ने के

कौशल से संबंधित शोध अध्ययनों से भी यह पता चलता है कि पढ़ना सिखने की सफलता या कामयाबी इस बात पर निर्भर करती है कि हम बच्चों को स्कूलों में केवल वर्णमाला पर आधारित रहन प्रवृति शिक्षा दे रहें हैं जिसके कारण बच्चों में प्रोत्साहन की कमी देखी जा सकती है अथवा उन्हें शुरुआत से ही प्रेरक व *Enabling reading* वातावरण दिया जाए, जिसमें बच्चे रट्टू तोते की तरह पढ़ने के बजाय स्वयं प्रोत्साहित और लगनशील रहें।

यहाँ यह बात गौर करने वाली है कि अगर शिक्षक बच्चों पर ध्यान दे और प्रत्येक बच्चे को स्नेह और मन से पढ़ाए तो वह इन बच्चों को भी पढ़ने के लिए प्रेरित कर सकता है। कोमल जो तीसरी कक्षा की छात्रा थी अकसर कक्षा में देर से आती थी और सप्ताह में कई बार अनुपस्थित भी हो जाती थी। किंतु मैंने पाया कि वह आते ही कक्षा के कोने की पहली सीट पर बैठना चाहती थी। देर से आने का कारण पूछने पर उसने बताया कि वह घर की सफाई करती है, खाना बनाती है, बर्तन मांजती है तब स्कूल आती है। कोमल को पढ़ने का बहुत शौक था, उसकी लिखाई साफ नहीं थी, किंतु बाकी बच्चों से पठन कौशल में आगे थी। मैंने यह भी देखा कि थोड़े से प्रोत्साहन से वह और भी प्रयत्न करती थी। उसे आवश्यकता थी शिक्षक के असीम स्नेह और उसमें छिपे गुण को पहचानने की।

शिक्षकों को चाहिए कि बच्चों को उनके स्तर के अनुसार कहानियों की किताबें पढ़ने के लिए दें। उन्हें छोटे समूह में खुलकर बातचीत करने के अवसर दें। बच्चों को छोटे-छोटे विषयों पर बोलने के लिए प्रेरित किया जा सकता है और बजाय कि बच्चों को रटने के लिए कहकर, फिर उन्हें किसी विषय पर 'वार्ता' करवाने से अच्छा उन्हें स्वयं के विचार मुक्त भाव से बोलने दें, चित्र पहेलियाँ, ध्वनि पहेलियाँ बूझने के अवसर दें जिससे बच्चों में सुनने व बोलने के कौशल विकसित हो सकें। कहने का तात्पर्य है कि पाठ्यपुस्तकों के अलावा भी ऐसा बहुत कुछ है जिससे शिक्षक बच्चों को पठन कौशल के अनुभव दे सकता है। शिक्षक को चाहिए कि बच्चों के पूरे व्यक्तित्व के विकास में मदद करें। पढ़ना सीखने के लिए यह बहुत आवश्यक है कि पाठ्यपुस्तकों से बाहर निकल कर बाल-केन्द्रित तरीकों व क्रियाओं का इस्तेमाल किया जाए। ध्यान रखें कि पढ़ना-लिखना सीखने के लिए यह आवश्यक है कि बच्चे भाषा को समझें और उसे अच्छी तरह बोलें, अपने विचारों और भावों को अपनी मातृभाषा में व्यक्त कर पाएँ। कक्षा का प्रेरक, उद्धीप्त व प्रिंट समृद्ध वातावरण बच्चों का आकर्षण अपनी ओर खींचता है, उन्हें पढ़ने के लिए लालायित करता है, उत्साहित करता है।

❑❑❑